SRJIS
www.srjis.com

IMPACT FACTOR (SJIF) 2021= 7.380 Online ISSN 2278-8808
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES
APRIL - JUNE,2021, VOL - 10, ISSUE-47

Indian Social & Research Foundation Akola ,
ARTS COLLEGE MALKAPUR, AKOLA
(Accredited By NAAC With "B" Grade)
Department of Music & IQAC Organizing

In Collaboration with
Sharda Sangeet - Kala Academy Indore (M.P.)

One Day National E- Conference

Contribution of Modern Technology in Globalization & Development of Music & All Interdisciplinary Subjects

Editor-In-Chief
Asso. Prof. Dr. Yashpal D. Netragaonkar
MIT World Peace University School of Education, Kothrud, Pune

Editor
Dr. Gitali S. Pande
Principal , Head of Music Department, Arts College Malkapur, Akola (M.S.)

Co- Editor
Dr. Sunil B. Patake
Department of Music Arts College Malkapur, Akola (M.S.)

SCHOLARLY RESEARCH JOURNALS
S. No. 5+4/5+4, TCG'S, Saidatta Niwas, D-wing, Ph- II, 2nd Floor, F. No. 104, Nr. Telco Colony & Blue Spring Society, Dattanagar, Jambhulwadi Road, Ambegaon (BK), Pune - 411046, Website: www.srjis.com

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

HINDI SECTION

Title & Author (S) Name	Page. No.
1. वैष्वीकरण के संदर्भ में संगीत के विकास में आधुनिक तकनीक की भूमिका। *डा० दीपषिखा सिंह*	*309-311*
2. समय के साथ भारतीय संगीत का बदलता स्वरुप और विकास *अमोल वासुदेवराव गावंडे*	*312-317*
3. वैश्वीकरण के युग में आधुनिक प्रौद्योगिकी के द्वारा संगीत में बदलाव एवं विकास *प्रा. अरूणा च. हरले*	*318-321*
4. वैश्विकरण और संगीत के विकास में आधुनिक प्रौद्योगिकी का योगदान *भागवत लहुबुवा ढोले*	*322-327*
5. वैश्वीकरण के संदर्भ में शिक्षक की स्थिति एवं उसकी भूमिका *डॉ. कृष्ण कांत*	*328-334*
6. सांगीतिक बंदिश का क्रमिक विकास और वैश्विक स्वरूप *डॉ. सुनील बाबूलालजी पटके & डॉ. शिरीष वि. कडू*	*335-340*
7. भारतीय संगीत के विकास में आधुनिक तंत्रज्ञान का योगदान *डॉ. वैशाली देशमुख*	*341-344*
8. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के साथ भारतीय कला व कलाकार *डॉ. करिश्मा कांबे*	*345-353*
9. भक्त कवि सूरदास कृत रचनाओं में राग : एक अध्ययन *दयाशंकर*	*354-362*
10. संगीत के माध्यम से विज्ञापन में नवीनता (वैश्वीकरण के विवेचन में) *डॉ. (श्रीमती) रूपाली गोखले*	*363-367*
11. गीतकार शैलेंद्र का शब्दजाल ! *कुमार नीरज*	*368-378*
12. नवीन आर्थिक नीति का बैतूल जिले के कृषि विकास एवं उत्पादकता पर प्रभाव – वैश्वीकरण तथा आधुनिक तकनिकी के योगदान के विशेष संदर्भ में *जगेन्द्र धोटे*	*379-384*
13. संगीत उन्नती मे आधुनिक तंत्रज्ञानों की भूमिका *डॉ. सरिता इंगळे*	*385-390*

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL SPECIAL ISSUE APR-MAY, 2021, VOL- 8/65

भारतीय संगीत के विकास में आधुनिक तंत्रज्ञान का योगदान

डॉ. वैशाली देशमुख

संगीत विभाग प्रमुख, शासकीय ज्ञान–विज्ञान महाविद्यालय, औरंगाबाद

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

भारतीय संगीत की घरोहर अनेक शताब्दियों से अविरत अविचल अनंतकाल से परीवर्तनो के अनेक दौर से चली आ रही है। वैदिक काल का तीन स्वरों का संगीत विकसित होकर आज संपूर्ण विश्व में सराहनीय है। क्योंकी भारतीय संगीत ने परीवर्तनता का गुण अपनाया और अनेक वर्षों से विकास की अनेक स्वरुपों को सन्मुख रखते हुए आज परीपुर्णता के रुप में संपूर्ण जगत में अपनी विशेषताओं से और विभिन्नताओं से विभोर है।

भारतीय संगीत का मुल स्त्रोत आध्यात्मिकता है। वैदिक काल का मंत्रोच्चारण आज राग गायन की अनेक शैलीओं के साथ विकास की अनेक सीमाओं को पार कर रही है। किंतू भारतीय संगीत का लक्ष्य केवल मन की शांती, आराधना, स्वरों में त्याग की भावना, संगीत के प्रति आत्मसमर्पण की भावना एक श्रद्धा की और निबद्ध है। मनुष्य की संवेदनाए भावनाओं की अभिव्यक्ती के लिए रचनात्मक साधनसामुग्री और वैज्ञानिक उपकरणोंकी समग्रता सें वह एक विशिष्ट प्रेरणा से अभिभूत होकर पराकाष्ठा की उद्देश्य से एक शक्ती, एक श्रद्धा, एक बिंदू, एक लक्ष्य, एक ईश्वर की और पहुॅच जाती है। और इन भावनोंकी की गहराईयों को पुंजी से भरा भारतीय संगीत विश्व जगत में परीपर्णता के रुप में विराजमान है।

भारतीय संगीत प्राचीन काल सें प्रगति पथपर निरंतर अग्रेसर है। शास्त्रीय संगीत शिक्षण प्राचीन काल से गुरु–शिष्य परंपरामें चला आ रहा है। किंतू आधुनिक संगीत शिक्षण वैज्ञानिक उपकरणों से सुसज्जित होकर विकसित हुआ है। गुरु–शिष्य परंपरा नें वैज्ञानिक उपकरणों को अपनाकर उसकी जटीलता को दूर कर संगीत शिक्षण सरल एवं सुगम बनाया है।

विज्ञान की प्रगति, विकास १६वी शताब्दी के बाद प्रारंभ हुई। आज के युग में संगीत जनमानस तक पहुॅचा है इसका श्रेय बहुत हद तक वैज्ञानिक उपकरणों का माना जा सकता है। वैज्ञानिक प्रगति तथा नवीन तकनीकीयों के अविष्कार के फलस्वरुप शिक्षा के उद्देश्य और शिक्षण प्रणाली में परीवर्तन हो गया है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

प्राचीन समय में गायक अपनी आवाज कोही इस तरह से तैयार करते थे की सभा या बडी महफीलों में गायक की आवाज सभी को सुनाई देती थी। लेकीन कुछ वर्षों के अंतर से इलेक्ट्रॉनिक मिडिया के कारण इस कठनाईयों का सामना कलाकारों को नही करना पडा। माइक्रोफोन के कारण हल्की आवाज भी लाखों लोगों के भिड में बडी सहतापूर्वक पहुँचती है। यह केवल विज्ञान के प्रगतीसेही संभव हुआ है।

हर एक श्रोता कलाकरोंकी भावनाओंको सहजतापुर्वक माइक्रोफोन के कारण महसुस कर सकता है। इसी लिये हमे ये मान लेना चाहिये की विज्ञान भारतीय संगीत के लिऐ वरदान है। विज्ञान ने भारतीय संगीत को माइक्रोफोन, रेडिओ, टेपरेकॉर्डर, दुरदर्शन, इंटरनेट, युट्युब, कॅसेट, सि.डी., पेनड्राईव्ह, अनेक माध्यम उपहार के रुप में दिये है। क्योंकी इन माध्यमोंसे संगीत प्रचार–प्रसार के लिये सहायता हुई है। और संगीत सिखना मतलब सबसे पहले अपने गुरु को शिक्षा सुनकर व समझकर अपने गायन या वादन में लाने का प्रयत्न करना ही संगीत का महत्त्वपूर्ण अंग है। इसी दृष्टी सें वैज्ञानिक माध्यम उपकरण संगीत में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

संगीत में गायन, वादन अनेक, लाखों रसिकश्रोताओं को सहजता पूर्वक पहुचानेवाला महत्त्वपूर्ण माध्यम माईक्रोफोन को इ.स. १८७६ में अमेरीका कें थॉमस एडीसन ने आविष्कृत किया। इस आविष्कार से संगीत जगत में संगीत का नया जन्म हुआ ऐसा लगता है। सभी कलाकारों को इस का महत्त्वपूर्ण फायदा मिलता है।

इ.स. १९३६ में भारत में रेडिओ मतलब आकाशवाणी का प्रचार एवं प्रसार हुआ। इ.स. १९१६ में विश्व का प्रथम रेडिओ समाचार अमरीका मे प्रसारण हुआ था। इ.स. १९२७ में २३ जुलाई को बंबई आकाशवाणी केंद्र और २६ अगस्ट १९२७ में कलकता आकाशवाणी केंद्र की विधिवत स्थापना हुई और प्रसारण शुरु हुआ। रेडिओ के आगमन सें भारतीय संगीत विकास में नई क्रांती आई। आकाशवाणी के कारण भारतीय संगीत सुनने के लिये इतना सुलभ हुआ की घर में बैठे बैठे बडे कलाकरो का गायन सुना जा सकता हैं। शास्त्रीय संगीत को सर्वाधिक लोकप्रिय बनानें में आकाशवाणी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत में दुरदर्शन की स्थापना १५ सितंबर १९५९ में टेलीविजन इंडिया के नाम से हुई थी। इ.स. १९७५ में इसका नामकरण 'दूरदर्शन' नाम से किया गया। इ.स. १९६५ में रोजाना प्रसारण प्रारंभ हुआ। दूरदर्शन भी संगीत के प्रचारप्रसार में अग्रेसर है। आज तो टेलिविजन पर अनेक संगीत के कार्यक्रम जनमानस तक पहुचते है और संगीत के ही ज्यादा मात्रा में कार्यक्रम टेलिविजन पर दिखाई देते है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

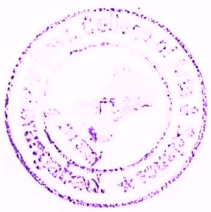

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

इ.स. १९३० में ध्वनी रेकॉर्डींग के लिए चुंबकीय टेप का उपयोग हुआ। इस माध्यम से विभिन्न अनेक कलाकारों का ध्वनिमुद्रण संभव हुआ और ये महान संगीत कला का जतनकार्य इस ध्वनिमुद्रण के माध्यम से सुलभ हुआ है। यह कला आनेवाली पिढी के लिये एक मार्गदर्शक के रुप में ध्वनिमुद्रण के माध्यम से आज जैसे जिवित रुप में है। यह एक महान कार्य ध्वनिमुद्रण के माध्यम से हुआ है।

इ.स. १९६९ में सबसे पहले इंटरनेट शुरु किया गया आज इंटरनेट के माध्यम से संपूर्ण विश्व बहुतही नजदिक आया है। और इंटरनेट का यह माध्यम संगीत के लिये न केवल उपयोगी है अपितू इससे संगीत का संवर्धन, विकास, प्रचार, प्रसार भरपूर मात्रा में हो रहा है। इस विषय में जितना लिखा जाये उतना कम ही होगा। इसलिये यहा सिर्फ यह जानना आवश्यक है की इंटरनेट यह माध्यम संगीत के लिय वरदान है। भारत में इंटरनेट का १५ अगस्ट १९९५ में इस्तमाल किया गया। आज इंटरनेट के कारण से ही कोविड की इस भयानक महामारी में भी सर्व शिक्षकों का अध्यापन कार्य सुव्यवस्थित रुप में चल रहा है। और विद्यार्थी अपने शिक्षकों से ज्ञान को ऑनलाईन माध्यम सें ले रहा है। यह बडा कार्य इंटरनेट के माध्यम से हा रहा है।

अनेक इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के माध्यम से संगीत जनमानस की और नजदिक आ रहा है। आज ऐसा कोई व्यक्ती हमे दिखाई नही देता है जिसे संगीत सुनना गाना पसंद नही है। इलेक्ट्रॉनिक तानपूरा, तबला भी एक सरल माध्यम है जिस के साथ कलाकार अपनी रोजकी तालीम रियाज सरलता पूर्वक कर पाते है। विद्यार्थीयों के लिये तो यह उपकरण एक वरदान के रुप में ही दिखाई देते है।

आज के विज्ञान युग मे विज्ञान ने इतनी तरक्की कर लि है कि रेडिओ, टी.वी., सी.डी. प्लेयर, कम्प्युटर, प्रोजेक्टर आदि पर आसानी से अपने मनपसंद गुरु का सानिध्य पा सकते है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण दुरस्थ शिक्षा (डिस्टन्स एज्युकेशन) इसमें विडीयो चैट तथा ओडियो चैट द्वारा कम्प्युटर की विधाओं की मदद से संगीत शिक्षा सरल हुई है तथा देश–विदेशों में संगीत का प्रचार व प्रसार भी काफी बडी मात्रा में हुआ है और आधुनिक तकनिकी के कारण घर बैठकर सरलता पुर्वक संगीत साधना जब मन करता है तब कर सकते है। और टेक्नीकल साधनों की सहायता से संगीत को और सुंदरतापुर्वक रुचिपूर्ण बना सकते है।

आधुनिक तकनिकी के कारण संपूर्ण संगीत विश्व में क्रांतीकारी बदलाव आये है। जनमानस को संगीत के शास्त्रीयता की जानकरी न होते हुए भी आधुनिक उपकरणों की मदत से वो संगीत के स्वरों की मधुरता का और भावभावनाओं का आनंद ले सकते है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

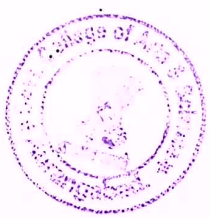

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

इसलिये आज हम ये निष्कर्ष पर आ सकते है की आधुनिक तकनिकी के कारण संगीत में बदलाव जरुर आया है लेकीन संगीत संपूर्ण विश्व में भर गया है। और संपूर्ण विश्व का हर एक व्यक्ती संगीत का आनंद इस आधुनिक तकानिकी के कारण ले सकता है। इसलिये आधुनिक तंत्रज्ञान संगीत के लिये एक वरदान के समान है। और संगीत शिक्षा के क्षेत्र में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान सराहनीय व प्रशंसनीय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

संगीतशास्त्र – मोहना मार्डीकर
संगीत रत्नावली – वसंत
संगीत विशारद – वसंत
भारतीय संगीत का इतिहास – उमेश जोशी
बंदिश – किरण फाटक

Govt. College of Arts & Science, Aurangabad

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad